ISSN-2230-7540

हिन्दी लघुकथा : स्वरूप, परिभाषा और तत्त्व

Dr. Hem Lata Sharma

Asst. Prof. J.C.M.M - Assandh Distt. Karnal,

Haryana-India

प्रस्तावना :

वर्तमान समय में लघुकथा एक नई विधा के रूप में अपनी जिजीविषा के साथ अपनी पहचान बनाने के लिए प्रयत्नशील है। प्रयत्न कापफी हद तक सपफल भी है। प्राचीन साहित्य में उल्लिखित लघुकथाओं से वर्तमान लघुकथा का स्वरूप और शिल्प पूर्णतः पृथक् है। नई विधा होने के कारण लघु कथा की सांगोपांग परिभाषा पर पहुँचना कठिन है। लघुकथा तत्त्वों के बारे में भी एक निर्णय कठिन है। हमारे सामने उपलब्ध सामग्री या सीमित आयामों को लेखकों ने विश्लेषण के द्वारा लघुकथा परिभाषा और तत्त्वों को व्याख्यापित करने का प्रयास किया है। शुरू के चरणों में कोई भी विद्या अपने आप में पूर्ण नहीं होती, यदि होती है तो उच्च शिखर के लेखकों द्वारा नई विद्या के साथ मनमानी की जाती है। 'निराला' जी ने जब मुक्त छन्द में अपनी आन्तरिक और सामाजिक आवाज को विद्वानों के सामने रखा तब विद्वानों ने, सम्पादकों ने उनकी रचनाओं को कूड़ेदान में डाल दिया। आज तक लघुकथा के साथ भी विद्वान जनों के उपेक्षित भाव दृष्टिगत होते हैं। आज मुक्त छन्द को उत्तम कोटि का माना जाता है। लघुकथा का भविष्य भी अन्धकारमय नहीं है। लघुकथा भी छोटी–छोटी गौण, दृष्टिहीन समस्याओं को दृष्टिगत कराने में सक्षम हैं। लघुकथाओं का सृजन और प्रकाशन सपफल विद्या का सूचक है।

अवधनारायण मुद्गल लघुकथा को अत्यन्त समर्थ विद्या मानते हुए 'सोच के नए धरातलों की तलाश' बदले हुए और तेजी से बदलते हुए सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यक्तिक संदर्भों से साक्षात्कार और जीवन में जो घटता जा रहा है, उसका सही प्रतिनिधित्व आज की लघुकथाएँ कर रही हैं।1 निरन्तर विकासशील विद्या के रूप में स्वीकृत किया।

लघुकथा : शाब्दिक व्याख्या :

ISSN-2230-7540

लघुकथा में लघु शब्द लघुकथा की विशेषता सूचक शब्द स्वीकारा गया है। लघु शब्द के भी अनेक अभिधार्थ जैसे फकनिष्ठ, शीघ्र, इष्टअभिप्रेत।2 लघु से आकारगत वैशिष्टय की अभिव्यक्ति होती है। लघु जो दीर्घ नहीं है, छोटी है–सीधे आकार की स्थिति पर प्रकाश डालती है। कितनी लघुता है, यह बात अलग है कि इस प्रसंग में सबल, सक्षम और पूर्ण 'विधान विधेय साहित्य विधाओं से तुलना अनिवार्य है।

उपन्यास में जीवन का विस्तृत और पूर्ण तथा कहानी में जीवन के निश्चित काल खंड का चित्राण होता है। नाटक और एकांकी का रूप भी अभिनय सम्मिलित होने के कारण लघु नहीं हो सकता। लघुकथाओं का लघुपन इसके लघुकलेवर को ही अभिव्यक्ति देता है। प्रकाशित लघुकथाएँ 300 से 500 शब्दों तक ही अधिकांश मिलती है।

'कथा' कथा तत्त्व की उपस्थिति का द्योतक हैं। लघुकथा कथातत्त्व की विराटता और गाम्भीरयता को अपने लघु आकार में समाहित करती है। लघु शब्द का साहित्यिक प्रयोग भी अपेक्षाकृत व्यापक अर्थ में हो रहा है, जैसे लघुकविता, लघु उपन्यास, लघुवार्ता, लघु कहानी आदि। 'कथा' शब्द 'कथ+अघ+टाप्' से बना है और कही हुई बात, वह जो कहा जाए। कुछ पौराणिक आख्यान जिसका कुछ अंश वास्तविक या सत्य हो और कुछ अंश कल्पित तथा जो धर्मोपदेशक के रूप में मानव की विस्तृत व्याख्या करके सुनाया जाये।3 लघु कथा के सन्दर्भ में 'कही हुई बात' अर्थ ही अधिक समीचीन लगता है।

लघुकथा के प्राचीन और रूढ़ार्थ गृहीत हैं। प्राचीन काल में यह प्रत्येक लघु आकारीय कथा, चाहे वह मनोरंजन या नीति प्रधान हो चाहे शिक्षा प्रदान करने वाली हो प्रयुक्त था। आज लघुकथा शब्द एक विशिष्ट कथा–विद्या के रूप में रूढ़ हो गया है।

जो परम्परागत लघुकथाओं की–सी नैतिकता, उपदेशात्मकता और खोखले आदर्शों का भार वहन नहीं करती, वरन् यथार्थ को निरावृत्त करने की एक शक्ति है। मानवीय संवेदनाओं को सम्प्रेषित करने की सामर्थ्य रखती है। 'मधुदीप' के शब्दों में 'वर्तमान लघुकथाएँ' आम आदमी की जिजीविषा को स्वर प्रदान कर रही है।4 गम्भीर लघुकथाकारों ने इसे स्थापित करने और अपेक्षित स्थान दिलवाने के लिए भरपूर कोशिश कार्य किए हैं। पफलतः आज यह हिन्दी साहित्य में अपना पृथक् अस्तित्व एवं महत्त्व बनाने में सपफल है।

अवध नारायण मुदगल के शब्दों में 'लघुकथा समूची कथाधारा की एक उपधारा है और इसे मुख्य धारा के उसी रूप में अलग किया जा सकता है। जब हम उपन्यास को एक नदी, कहानियों को नहरें और लघुकथाओं को उपनहरें मान लें। इन उपनहरों का अपना अलग अस्तित्व और महत्त्व है, दूर–दराज की जिस बंजर जमीन को नहरों से नहीं जोड़ा जा सकता, उसे उपनहरों से जोड़कर उपजाऊ बनाया जा सकता है। अतः लघुकथा हम एक ऐसी विद्या कह सकते हैं, जिसमें किसी एक खण्ड, क्षण मनःस्थिति मर्यादित रूप में चित्रिात हो और जो प्रखरता एवं प्रभवोत्पादकता के साथ पाठक को भीतर तक झकझोर दे तथा उसे चिन्तन के लिए मजबूर कर दे।5

लघुकथा की परिभाषा :

ISSN-2230-7540

लघुकथा एक नवीनतम गद्य विद्या है। लघुकथा की एक सुनिश्चित परिभाषा जिसके द्वारा वर्तमान युग की जटिलता, सामाजिक विसंगतियाँ, वर्गभेद, पारिवारिक विघटन, व्यक्तिगत टूटन, रिश्तों के बिखराव आदि को अभिव्यक्त किए जाने में समर्थ हो विद्वानजनों की टेढ़ी आँख से देखने और बड़ी–बड़ी व्यावसायिक पत्रिकाओं के द्वारा इसके अस्तित्व को नकारने के कारण निर्धारित नहीं हो पाई हैं डॉक्टर इन्द्रनाथ मदान 'लघुकथा' की परिभाषा मेरे पास नहीं है। इसके महत्त्व के बारे में इतना ही कहा जा सकता है कि यह पत्रा–पत्रिाकाओं में खाली स्थान भरने के काम आ रही है छोटे सपफर की बोरियत काटने में।6 डॉ॰ लक्ष्मी नारायण लाल ने लिखा है कि फ्लघुकथा और कहानी में तात्विक दृष्टि से 'लघुकथा' कहानी के छोटे रूप से अपना तात्पर्य रखती है। पर यह कहना कि लघुकथा लम्बी कथा का सार रूप है, नितांत भ्रमोत्पादक है।य्7 वस्तुतः डॉ॰ लाल लघुकथा के स्वतन्त्रा विधा होने को रेखांकित करना चाह रहे हैं और उसे कहानी का सार रूप स्वीकारने का खंडन करते रहे हैं।

डॉ॰ महाराज कृष्ण जैन का मत है कि फ्यह सामान्य कहानी की भाँति मानव जीवन पर टिप्पणी के रूप में लिखी जाती है। प्रायः यह किसी रूपक का आक्षय लेकर अपना लक्ष्य पूरा करती है या उसे किसी घटना अथवा वाक्चातुरी के माध्यम से प्रभाव उत्पन्न करने के लिए उसके पास व्यंग्य ही श्रेष्ठ अस्त्रा है।य्8 मधुदीप का कथन है 'व्यंग्य को लघुकथा की अनिवार्यता को स्वीकार करना वास्तव में लघु कथा का संकुचन करना है।9 पृथ्वी राज अरोड़ा लघुकथा को 'प्रामाणिक अनुभूतियों पर आधारित किसी एक क्षण को सुगठित आकार के माध्यम से लिपिबद्ध किया गया प्रारूप10 मानते हैं। यथार्थ को उजागर करने पर बल दिया गया है।

'बलराम अग्रवाल' एक टुकड़ा–सा सच जो अपने आप में पूर्ण भी होता है, बिना ज्यादा लाग लपेट के रख दिया जाये और रोचकता और प्रमाणिकता के लिए कुछ जरूरी शब्द जुआ लिये जायें तो उसे लघुकथा समझें।11

शकुंतला किरण का विचार है फ्अपने लघु रूप में भी यह युगबोध की समर्थ संवाहक व कुशल सम्प्रेषक है, जीवन के किसी भी सूक्ष्म का चश्मदीद कैमरा है, जिसमें आलोच्य क्षण की हू–ब–हू छवि अंकित करने की सामर्थ्य है, परम्परागत जीवन मूल्यों के लिए प्रहारक व नये जीवन मूल्यों की सृजक है, क्रान्ति चेतना की ऐसी चिंगारी जिसमें हर गलत व्यवस्था के विरुद्ध आग लगा सकने की पूरी क्षमता है।12 कमलेश भारती इसकी लघुता को ही मुख्य गुण मानते हुए कहते हैं 'यह अनुभूति के उन क्षणों की पकड़ है जिन्हें जानबूझ कर विस्तार नहीं दिया जा सकता।13 डॉ॰ स्वर्ण किरण लघुकथा को फ्जीवन की दौड़ती गति का लहर चित्रा या जिन्दगी की एक कतरन झलाईस ऑपफ लाईपफ स्वीकार करते हैं।14 सिमर सदोष लघु कथा को गागर में सागर भरने का उपाय मानते हुए कहते हैं, फ्थोड़े में बहुत कहने की प्रवृत्ति ही लघुकथा के रूप में प्रस्पुफटित हुई है। सार गार्भिता और गांभीर्य इसकी पहली दो शर्तें हैं। यह वह रचना है जिसमें विश्रृंखलित इकाइयों को सार गार्भित प्रारूप में समग्रता प्रदान की जा सकती है।15 रमेश बतरा फ्जिसमें केवल शब्द ही सीमित होते हैं, चिंतन नहीं, इसके कथानक प्रतिबन्धित नहीं अपितु मर्यादित होकर कथ्य का निर्वाह करते हुए सीधे और सपाट ढंग से विषय में निहित मर्म का प्रतिपादन करते हुए सीधे और सपाट ढंग से विषय में निहित मर्म का प्रतिपादन–करते हैं।16 उपन्यास को यदि हम 'रमणीय–उद्यान' कहें और कहानी को ऐसा गमला जिसमें एक ही पौधे का सम्मुनत रूप दृष्टिगोचर

ISSN-2230-7540

हो तो लघुकथा को डाली से तोड़े गये ताजे पूफल की उपमा दी जा सकती है।17

लघुकथा के सर्जकों द्वारा तथा समीक्षकों द्वारा दी गई परिभाषाओं पर विचार करने के पश्चात् लघु कथा के लक्षणों की गणना संक्षेप में करनी हो, तो उन्हें इस प्रकार रखा जा जा सकता है–

1. जीवन के जीवंत क्षणों की अभिव्यक्ति।
2. किसी एक क्षण का सुगठित आकार।
3. सूक्ष्म का चश्मदीद कैमरा।
4. लघु आकार।
5. व्यंग्वत्ता
6. कम से कम शब्दों में तीखा सच।
7. सूत्रा रूप में विराट जीवन की कथा।
8. अर्थवहन की अपूर्व क्षमता/न भावुकता, न उहापोह, न आसक्ति।
9. गंभीर चिन्तन–बीज।
10. खण्ड अनुभूति की तीव्रता।
11. शैलीगत सूक्ष्मता।

लघुकथा के तत्त्व :

लघुकथा, कहानी परिवार की विधा है, किन्तु आज इसका मौलिक व्यक्तित्व है, स्वतंत्रा गद्य विद्या है, क्रांतिकारी आयाम है और एक नूतन साहित्यिक मोड़ है। पुराने बीज को नई धरती मिल गई है। लघुकथा तब भी थी 'जब भाषा का लिप्यांतरण नहीं हुआ था, उस समय भी लघुकथाएँ समूहों में बैठे हुए किस्सों के रूप में कही जाती थी। सच के रहस्य को उद्घाटित करने वाली थी। वस्तुतः लघुकथा का एक दीर्घ इतिहास है, एक नये इतिहास का निर्माण ये लघुकथाएँ कर रही हैं।

'लघुकथा' और 'कहानी' एक ही साहित्य परिवार की विधाएँ हैं। कभी–कभी विद्वानों द्वारा कहानी के तत्त्वों का ही आरोपण लघुकथा पर भी कर दिया जाता है। वस्तुतः कहानी के तत्त्वों से लघुकथा का अलगाव है। मधुदीप ने इसे कहानी व उपन्यास से भी ऊँचा दर्जा दिया है– फआज जबकि कहानी और उपन्यास अपने शिल्प, शैली और भाषा की दुरुहता के कारण आम पाठक से कटते जा रहे हैं, वहाँ उस खाई को पाटने के लिए लघुकथा महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती

ISSN-2230-7540

है।18

यही बात अवधनारायण मुदगल ने भी कही है, फजब कहानी नये आयामों की तलाश छोड़ती जा रही है और आम आदमी के नाम पर आम आदमी का जनाजा बनती जा रही है तब भटकाव के उस गेम को खोलने के लिए लघुकथा नये तेवर अख्तियार करके तेजी के साथ सामने आई है। ये तेवर कथ्य के भी है और तथ्य के भी।19 लघुकथा में वह शक्ति है कि यह उन कथानकों को भी प्रभावशाली ढंग से सम्प्रेषित कर सकती है, जिनको अभिव्यक्त अन्य गद्य–विधाएँ नहीं कर पा रही है। लघुकथा के स्थूल तत्त्व निम्न है–

1. शीर्षक
2. मूल स्थिति
3. अन्त की ध्वन्यात्मकता
4. भाषा की सांकेतिकता
5. कथोपकथन
6. रूपकात्मकता
7. शैली
8. जीवन–दर्शन

शीर्षक : लघुकथा की संवेदना को वहन करने का एक सशक्त व योग्य माध्यम शीर्षक है। लघुकथाकार अपनी कृति द्वारा जिस मार्मिक सत्य का उद्घाटन करना चाहता है, उसकी प्रतिच्छाया लघुकथा के शीर्षक में सन्निहित रहती है।

मूल स्थिति : लघुकथा विस्तृत कथानक के स्थान पर एक प्रसंग, एक दृश्य, एक अनुभूति एक स्थिति से सम्बद्ध होती है। पढ़ने के बाद एक ही तरह की संवेदना और सम्प्रेषणीयता होती है कि फइसका प्रमाण कोंध की तरह होता है जो बिजली की भांति चमक कर कड़क–सी उत्पन्न करत जाता है।

अन्त की ध्वन्यात्मतकता : अंत का हर साहित्यिक विधा में महत्त्व होता है किन्तु लघुकथा में अन्त का अपना विशेष स्थान होता है। लघुकथाकार आशय की ओर संकेत मात्रा करके लघुकथा का अन्त कर देता है। लघुकथा में पाठकों की सद्भावना के विरुद्ध अकस्मात् कुछ ऐसी बातों का आविर्भाव हो जाता है या लेखक कर देता है, जिस कारण पाठक अपने विचारों में खोकर ही अपने अन्दर–ही–अन्दर मथ उठता है।

भाषा की सांकेतिकता : भाषा की सांकेतिकता से ही लघुकथा सशक्त और मार्मिक बनती है। कहानी या उपन्यास में भाषा

ISSN-2230-7540

की सांकेतिकता कृति को जटिल, अप्रभावशाली व कृत्रिम बनाती है, लघुकथा में सांकेतिकता मनःस्थिति को, लेखन कार्य को चुस्त और प्रभावी बनाती है। एक–एक शब्द का अपना निश्चित स्थान होता है। लघुकथा को जरा भी विस्तार दिया कि उसमें एकदम दरार पड़ जाती है। प्रभाव समाप्त होने लगता है। लघुकथा सामाजिक भूमि का तभी निर्वाह कर सकती है, जब उसका शिल्प आदमी के हालातों की–सी सीधी–सच्ची बयानी सरल शब्दों द्वारा कर सके और जिससे जनमत को उसकी संवेदना का भागीदार बनाता चला जाये। लघुकथा की भाषा में थोड़े में अधिक कहने की प्रवृत्ति होती है, इसी–लिए प्रचलित मुहावरे व लोकोक्ति इसे अभिष्ट रहे हैं। संकेतमात्रा से ही लघुकथाकार अपनी बातों को पाठकों तक पहुँचाता है। पाठक लघुकथा की एक भी पंक्ति निकाल देता है तो कथाकार की हत्या करने पर उतारू है।

कथोपकथन : लघुकथा का सम्भाव्य तत्त्व है। अनिवार्य तत्त्व नहीं है। प्रायः सभी गद्य विधाओं में संवादों के आश्रय से लक्ष्यों की ओर बढ़ा जाता है। वैसे तो लघुकथाएँ संवादों से रहित सशक्त बन पड़ी है, परन्तु संवादों के सहारे से भी लघुकथार लघकथाएँ रचता है। ये संवाद संक्षिप्त, चुटकीले, आँचलिकता को अपने अन्दर समेटे हुए सरल और सुग्राह्य होते हैं। संवादों में व्यंग्य, पैनापन और सटिकता अपेक्षित है। लघुकथा के संवाद अनावश्यक विस्तार का भार वहन करने की क्षमता नहीं रखते। लघुकथा में 'लघु' शब्द ही एक सीमा रेखा है। संवाद लघुकथा को परसंवेध, रोचक बनाते हैं, वातावरण निर्माण करने में समर्थ होते हैं, पिफर भी कथोपकथन एक सामान्य तत्त्व है और संक्षिप्तता, चुटकीलापन और सहजता व सरलता उसके विशेष गुण है।

रूपाकात्मकता : लघुकथाकार जो भी बात कहना चाहता है, वह प्रतीक या रूपक के माध्यम से व्यंग्यात्मकता पूर्ण सिद्ध होती है। यह एक विशिष्ट तत्त्व है।

शैली : लघुकथा की कोई एक सुनिश्चित शैली नहीं है। शैली का वैभिन्य देखा जा सकता है। लघुकथाकारों ने अपने अनुरूप शैली या तो तलाश ली है या तराश ली है। लघुकथाकारों ने कथ्यानुसार विविध शैलियों का प्रयोग किया है। डॉ॰ शंकर पुणतांबेकर मानते हैं कि फ्लघुकथा की एक अपनी शैली होती है, लघुकथा ही उसके लक्ष्य भी, उसके प्रभाव की नियामक होती है। लघुकथा की शैली संक्षिप्त है।

कहानी और लघुकथा को पार्थक्य प्रदान करने वाला महत्त्वपूर्ण तत्त्व शैली ही है। शैली ने ही लघुकथा के पृथक् अस्तित्व को प्रस्थापित कर इसे प्रतिबिम्बित और प्रतिष्ठित किया है। शैली के कारण ही लघुकथा पाठक को तिलमिला देती है और गंभीर शाश्वत प्रभाव उस पर छोड़ती, मर्याहत कर देती है। लघुकथा की प्रमुख शैलियों में संवादात्मक, वर्णनात्मक व विचारात्मक शैली है। लघुकथा के कथ्य को सशक्त बनाने में शैली का विशेष स्थान है या विशेष हाथ है।

जीवन दर्शन : प्रत्येक साहित्यिक विधा सोद्देश्य होती है, विधा के माध्यम से लेखक कोई विचार, तथ्य, समस्या, समाधान, दृश्य, चित्रा, स्थिति प्रस्तुत करना चाहता है। लघुकथा में एक ही प्रयोजन होता है। लघुकथाकार घुमावदान आयामों में से गुजरता हुआ बन्दूक की गोली के समान निशाने पर पहुंचता है। महावीर प्रसाद जैन मानते हैं कि लघुकथा समस्याजनक स्थिति की आंशिक अभिव्यक्ति देकर खामोश हो जाती है और पाठक को समस्या का समाधान अपने ढंग से–अपने लिए

ISSN-2230-7540

खोजना होता है। लेखक अपना समाधान हम पर आरोपित नहीं करता और न ही वह पाठकों की भलाई साधने के लिए उत्कंठित रहता है। संक्षेप में लघुकथा का लक्ष्य भटके हुए मुसापिफर को ठिकाने तक छोड़ आना नहीं है बल्कि ठिकाने की और निर्देश कर देना ही है।

निष्कर्ष :

हिन्दी के आधुनिक गद्य में 'लघुकथा' स्वतंत्रा साहित्यिक गद्य विधा के रूप में स्वीकृत है। आज की कथा संवेदना के केन्द्र में मानवीय सम्बन्धों के प्रति या अपनी निजता के प्रति जो स्थितियाँ हमें कचोटती है, उन्हें कम–से–कम समय और कम–से–कम शब्दों में सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान करके 'लघुकथा' मानव मन को झकझोर देती है। वस्तुतः लघुकथा साहित्य की वह गद्य–विधा है जो सूक्ष्म भावात्मक प्रभाव को एकांगिकता का अनुसंधान करती हुई अपनी एकाग्र दृष्टि से जीवन की किसी स्थिति, खण्डित चित्रा या मनोभावों को रूपायित कर देती है। छोटी–सी घटना अथवा स्थिति के माध्यम से किसी गूढऋ सत्य की अभिव्यक्ति भी लघुकथा में रहती है। निरुपित स्थिति के प्रति सचेतता और यथार्थ के प्रति सक्रियता की ओर भी लघुकथा सदैव सजग रहती है। लघुकथा सर्जन के विविध दौर से गुजरने के कारण निश्चयात्मक रूप से तत्त्वों का परिगणन दुष्कर कार्य है पिफर भी उपरोक्त तत्त्व महत्त्व की दृष्टि से उपयोगी है।

आधर–सूची :

1. स॰म॰प्र॰ जैन, ज॰ कश्यप, छोटी–बड़ी बातें, पृ. 9
2. श्यामसुन्दर दास, हिन्दी शब्द सागर 8वां भाग, पृ. 424
3. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश–7, पृ. 443
4. सं॰ मध्ुदीप व मध्ुकांत, तनी हुई मुटि्ठयाँ, पृ. 9–10
5. छोटी–बड़ी बातें, अवध् मुदगल की प्रस्तावना, पृ. 8
6. साहित्य निर्झर, लघुकथा विशेषांक, पृ. 4
7. डॉ॰ धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी–साहित्य कोश, भाग–1, पृ. 740
8. साहित्य निर्झर, लघुकथा विशेषांक, पृ. 4
9. तनी हुई मुटि्ठयाँ, मध्ुदीप का लेख, पृ. 15
10. कुरुशंख, लघुकथांक, जून 1980, पृ. 25

ISSN-2230-7540

11. देवता बीमार है, लघुकथा–संग्रह

12. सं॰ सतीश दुबे, आठवें दशक की लघुकथाएँ, पृ. 3

13. साहित्य निर्झर, लघुकथांक, 1974, पृ. 5

14. नालंदा दर्पण सं॰ सतीश दुबे, मार्च 1916 अंक

15. साहित्य निर्झर, लघुकथांक 1974, पृ. 5

16. वही, पृ. 7

17. कुरुशंख, लघुकथांक, जून 1980, पृ. 25

18. तनी हुई मुट्ठियाँ, मधुदीप का लेख, पृ. 15

19. स॰म॰प्र॰ जैन, ज॰ कश्यप, छोटी–बड़ी बातें, पृ. 8

IGNITED MINDS Journals